शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता का प्रभाव : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में

डॉ. प्रभाकर पाण्डेय*

सारांश -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने ग्राम पंचायतों को शिक्षा में सुधार और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में मान्यता दी है। ग्राम पंचायतों ने स्कूलों में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने, शिक्षण सामग्री प्रदान करने, और शैक्षिक माहौल को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाई। यह पहल स्थानीय समुदाय और शिक्षा के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करने में सहायक रही। ग्राम पंचायतों ने स्कूल भवनों के निर्माण और मरम्मत, पेयजल और शौचालय जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता, और खेलकूद सामग्री प्रदान करने जैसे कार्यों में सक्रिय योगदान दिया। इसके अलावा, उन्होंने शिक्षकों और छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए निगरानी प्रणाली विकसित की। MHRD की रिपोर्ट के अनुसार, "ग्राम पंचायतों ने स्कूलों के भौतिक और शैक्षणिक वातावरण को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे छात्रों की भागीदारी और शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।" ग्राम पंचायतों को स्थानीय स्तर पर शिक्षा सुधार के लिए एक निर्णायक भूमिका दी गई, जिसमें वे शिक्षा योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी में सक्रिय भागीदार बने। ग्राम पंचायतों ने समुदाय और विद्यालयों के बीच एक कड़ी का कार्य किया, जिससे न केवल स्कूल प्रबंधन में पारदर्शिता बढ़ी, बल्कि शिक्षा के प्रति समुदाय की जिम्मेदारी भी बढ़ी। इस भागीदारी ने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता में सुधार किया। इस प्रकार, ग्राम पंचायतों की भागीदारी ने शिक्षा को समावेशी और सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। NEP 2020 ने शिक्षा को स्थानीय जरूरतों और संसाधनों से जोड़कर इसे समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

कुञ्जी शब्द - राष्ट्रीय शिक्षा नीति, ग्राम पंचायत, शिक्षा, शिक्षा सुधार, विकास, शिक्षण सामग्री, समुदाय, स्कूल, पेयजल, शौचालय, खेलकूद, शिक्षक, छात्र, उपस्थिति, निगरानी प्रणाली, MHRD, भौतिक - शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण, गुणवत्ता।

प्रस्तावना -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है, जिसमें शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर इसे सामाजिक, सांस्कृतिक, और सामुदायिक विकास का एक साधन बनाने पर बल दिया गया है। सामुदायिक भागीदारी इस नीति का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, जो शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रासंगिक, और प्रभावी बनाने की दिशा में कार्य करती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल छात्रों को ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें एक नैतिक, संवेदनशील, और जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना भी है। सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से शिक्षा में अभिभावकों, स्थानीय समुदायों, और पंचायतों को सक्रिय भागीदार बनाया गया है। इसने स्कूलों की प्रबंधन प्रक्रिया, संसाधनों की उपलब्धता, और शैक्षिक माहौल को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्कूल प्रबंधन समितियाँ (SMCs), ग्राम पंचायतों की भागीदारी, और सामुदायिक सेवा परियोजनाएँ जैसे नवाचार शिक्षा को स्थानीय स्तर पर सुदृढ़ और प्रासंगिक बनाने के प्रयास हैं। इसके अतिरिक्त, विद्या प्रवेश और स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट जैसे कार्यक्रमों ने जमीनी स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाने में सहयोग किया है। यह आलेख NEP 2020 के तहत सामुदायिक भागीदारी के विभिन्न नवाचारों, उनके कार्यान्वयन, और उनके प्रभाव का विस्तार से विश्लेषण करता है। यह यह भी दर्शाता है कि सामुदायिक भागीदारी ने शिक्षा को कैसे एक समावेशी और प्रभावी प्रणाली में परिवर्तित किया है।

- **सामुदायिक भागीदारी के प्रमुख नवाचार -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने शिक्षा को सशक्त और समावेशी बनाने के लिए सामुदायिक भागीदारी को एक प्रमुख साधन के रूप में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य शिक्षा को स्थानीय समुदाय, अभिभावकों, और पंचायतों के सहयोग से मजबूत करना है। सामुदायिक भागीदारी के तहत स्कूल प्रबंधन समितियाँ (SMCs), ग्राम पंचायतों की भागीदारी, और सामुदायिक सेवा परियोजनाओं जैसे नवाचारों को बढ़ावा दिया गया। इन नवाचारों ने न केवल शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार किया, बल्कि छात्रों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन नवाचारों का विवरण निम्नानुसार है-

- **स्कूल प्रबंधन समितियाँ (School Management Committees - SMCs) -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए स्कूल प्रबंधन समितियों (School Management Committees - SMCs) को अधिक सक्रिय और प्रभावी बनाने का सुझाव दिया। SMCs का मुख्य उद्देश्य स्कूलों के विकास और प्रबंधन में स्थानीय समुदाय, अभिभावकों, और शिक्षकों की भागीदारी सुनिश्चित करना है। ये समितियाँ स्कूलों की विकास योजनाएँ तैयार करने और उन्हें लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही, SMCs ने स्कूल प्रबंधन में पारदर्शिता और सहयोग को बढ़ावा दिया

है। MHRD की एक रिपोर्ट के अनुसार, "स्कूल प्रबंधन समितियों ने स्थानीय समुदायों को शिक्षा के प्रति जागरूक और सक्रिय भागीदार बनाया है। इसके परिणामस्वरूप स्कूलों में बुनियादी ढाँचे, शिक्षण सामग्री, और संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।"[1] NEP 2020 ने SMCs को शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में एक प्रमुख कड़ी माना है, जिसमें स्थानीय स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में सुधार लाने के लिए समुदाय की सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया गया है। SMCs के माध्यम से अभिभावकों और शिक्षकों को स्कूल प्रबंधन की विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया गया। इससे न केवल निर्णय लेने की प्रक्रिया में समुदाय की भागीदारी बढ़ी, बल्कि स्कूलों के प्रति उनकी जिम्मेदारी और जागरूकता भी बढ़ी। उदाहरण के लिए, SMCs ने विद्यालय में संसाधनों की उपलब्धता, छात्रों की उपस्थिति, और शिक्षा की गुणवत्ता पर नजर रखने के लिए नियमित बैठकें आयोजित कीं। इसके अतिरिक्त, SMCs ने छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए कई नवाचारों को भी अपनाया। इनमें स्थानीय समुदाय की विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का आयोजन, स्कूल भवनों की मरम्मत और रखरखाव, और स्कूल में स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान शामिल था। MHRD की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि "SMCs ने स्कूलों में न केवल बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाया, बल्कि समुदाय और स्कूल के बीच एक मजबूत संबंध भी स्थापित किया।"[2]

इस प्रकार, SMCs ने न केवल स्कूलों के प्रबंधन को सुदृढ़ किया, बल्कि शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। NEP 2020 का यह दृष्टिकोण शिक्षा को स्थानीय समुदायों के साथ जोड़कर इसे एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाने में सफल रहा है।

- **ग्राम पंचायतों की भागीदारी : शिक्षा में स्थानीय योगदान का सशक्त माध्यम -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने ग्राम पंचायतों को शिक्षा में सुधार और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में मान्यता दी है। ग्राम पंचायतों ने स्कूलों में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने, शिक्षण सामग्री प्रदान करने, और शैक्षिक माहौल को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाई। यह पहल स्थानीय समुदाय और शिक्षा के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करने में सहायक रही। ग्राम पंचायतों ने स्कूल भवनों के निर्माण और मरम्मत, पेयजल और शौचालय जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता, और खेलकूद सामग्री प्रदान करने जैसे कार्यों में सक्रिय योगदान दिया। इसके अलावा, उन्होंने शिक्षकों और छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए निगरानी प्रणाली विकसित की। MHRD की रिपोर्ट के अनुसार, "ग्राम पंचायतों ने स्कूलों के भौतिक और शैक्षणिक वातावरण को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,

[1] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

[2] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

जिससे छात्रों की भागीदारी और शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।"[3] ग्राम पंचायतों को स्थानीय स्तर पर शिक्षा सुधार के लिए एक निर्णायक भूमिका दी गई, जिसमें वे शिक्षा योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी में सक्रिय भागीदार बने। उदाहरण के लिए, कई ग्राम पंचायतों ने स्कूलों में डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की और स्मार्ट क्लासरूम बनाने के प्रयास किए। इसके साथ ही, उन्होंने स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने की दिशा में भी कार्य किया, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बन सके। ग्राम पंचायतों ने समुदाय और विद्यालयों के बीच एक कड़ी का कार्य किया, जिससे न केवल स्कूल प्रबंधन में पारदर्शिता बढ़ी, बल्कि शिक्षा के प्रति समुदाय की जिम्मेदारी भी बढ़ी। इस भागीदारी ने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता में सुधार किया। इस प्रकार, ग्राम पंचायतों की भागीदारी ने शिक्षा को समावेशी और सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। NEP 2020 ने शिक्षा को स्थानीय जरूरतों और संसाधनों से जोड़कर इसे समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

- **अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की सहभागिता : शिक्षा में सामूहिक भागीदारी का महत्त्व -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने शिक्षा में अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में मान्यता दी है। यह पहल शिक्षा को अधिक समावेशी और सशक्त बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। NEP 2020 के अनुसार, "अभिभावक और स्थानीय समुदाय केवल शिक्षा के लाभार्थी नहीं हैं; वे इसके सह-निर्माता और सह-प्रबंधक भी हैं।" इस दृष्टिकोण का उद्देश्य शिक्षा को समाज से गहराई से जोड़ना और छात्रों की समग्र विकास प्रक्रिया में सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करना है। इस दिशा में सामुदायिक कार्यक्रमों, स्कूलों की खुली बैठकों, और सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को बढ़ावा दिया गया। स्कूलों में खुली बैठकें आयोजित करके अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को विद्यालय की गतिविधियों और प्रगति में शामिल किया गया। इन बैठकों ने न केवल स्कूल प्रबंधन में पारदर्शिता बढ़ाई, बल्कि अभिभावकों को उनके बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णय लेने में सक्षम बनाया। सामुदायिक सेवा परियोजनाओं ने छात्रों और समुदाय के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित किया। उदाहरण के लिए, वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, और स्थानीय समस्याओं पर सामूहिक चर्चा ने छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरणीय चेतना को बढ़ावा दिया। MHRD की रिपोर्ट में कहा गया है, "अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की सहभागिता ने न केवल स्कूलों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई, बल्कि छात्रों के सीखने के अनुभव को भी समृद्ध किया।"[4]

---

[3] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

[4] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

इसके अलावा, सामुदायिक सहभागिता ने छात्रों को उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक जड़ों से जोड़ा। स्थानीय समुदायों ने अपनी पारंपरिक विशेषज्ञता और अनुभव को शिक्षा में जोड़ा, जिससे छात्रों को व्यावहारिक और सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त हुई। यह पहल विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में प्रभावी साबित हुई, जहाँ सामुदायिक समर्थन ने शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच दोनों में सुधार किया। इस प्रकार, अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की सहभागिता ने शिक्षा को एक समावेशी और सहयोगी प्रक्रिया में बदल दिया है। यह न केवल छात्रों की शैक्षिक यात्रा को अधिक प्रासंगिक और उपयोगी बनाता है, बल्कि समाज के प्रत्येक सदस्य को शिक्षा के प्रति अधिक जिम्मेदार और जागरूक भी बनाता है।

- **विद्यालय-समुदाय कनेक्शन: शिक्षा को स्थानीय संदर्भों से जोड़ने की पहल -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने विद्यालयों और समुदायों के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करने को प्राथमिकता दी है। इसका उद्देश्य शिक्षा को स्थानीय सांस्कृतिक, भाषाई, और सामाजिक संदर्भों के साथ जोड़कर इसे अधिक प्रासंगिक, समावेशी, और प्रभावी बनाना है। इस पहल के तहत स्थानीय परिवेश, परंपराओं, और सांस्कृतिक धरोहर को शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा बनाया गया। विद्यालय-समुदाय कनेक्शन के तहत स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया गया। NEP 2020 के अनुसार, "मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने से बच्चों को जटिल अवधारणाओं को समझने और उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने में मदद मिलती है।"[5] यह पहल न केवल छात्रों की भाषाई दक्षता को बढ़ाती है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करती है। स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर छात्रों को अपने आसपास के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के बारे में शिक्षित किया गया। उदाहरण के लिए, लोककथाओं, लोकगीतों, और क्षेत्रीय उत्सवों को विद्यालयों में शामिल किया गया, जिससे छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर का ज्ञान हुआ। इसके साथ ही, स्थानीय कारीगरों और विशेषज्ञों को विद्यालय गतिविधियों में शामिल कर व्यावहारिक और कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।

इसके अलावा, विद्यालय-समुदाय कनेक्शन ने छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को भी शिक्षा प्रक्रिया का सक्रिय भागीदार बनाया। सामुदायिक बैठकों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों, और सामाजिक परियोजनाओं के माध्यम से विद्यालयों और समुदायों के बीच एक जीवंत संवाद स्थापित हुआ। MHRD की रिपोर्ट में कहा गया है कि "विद्यालय-समुदाय कनेक्शन ने शिक्षा को समाज की जरूरतों और प्राथमिकताओं के साथ जोड़कर इसे अधिक प्रासंगिक बनाया।"[6]

---

[5] *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)*, अध्याय 4.11।

[6] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

इस प्रकार, विद्यालय-समुदाय कनेक्शन ने शिक्षा को छात्रों के जीवन और उनके समुदाय के संदर्भ में जोड़ने का कार्य किया। यह पहल न केवल शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाने में सहायक रही है, बल्कि छात्रों को उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान से जोड़ने में भी सफल हुई है।

- **जमीनी स्तर पर सामुदायिक भागीदारी के उदाहरण :-**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने शिक्षा को जमीनी स्तर पर सशक्त बनाने के लिए सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। इस नीति के तहत विभिन्न कार्यक्रम और पहल लागू की गईं, जिनका उद्देश्य शिक्षा को स्थानीय समुदायों की जरूरतों और संसाधनों से जोड़ना है। विद्या प्रवेश, स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट, और सामुदायिक सेवा परियोजनाओं जैसे उदाहरणों ने शिक्षा में सामाजिक जिम्मेदारी, स्थानीय संस्कृति, और नवाचार को समाहित किया। ये पहल न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाती हैं, बल्कि छात्रों और समुदाय के बीच एक मजबूत संबंध स्थापित करने में भी सहायक हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है -

- **विद्या प्रवेश (Vidya Pravesh) :-**

विद्या प्रवेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के तहत प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। यह कार्यक्रम बाल मनोविज्ञान आधारित अनुकूलन प्रक्रियाओं पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य छात्रों को शिक्षा प्रणाली के प्रति सहज और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करना है। इस पहल के माध्यम से बच्चों को उनके परिवार और समुदाय के सहयोग से स्कूल की गतिविधियों और शैक्षणिक माहौल से जोड़ा जाता है। विद्या प्रवेश का मुख्य उद्देश्य छोटे बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया में आत्मविश्वास के साथ शामिल करना है। इसके तहत खेल-आधारित शिक्षा, कहानियों, गीतों, और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का उपयोग किया जाता है, ताकि बच्चे अपनी जिज्ञासा और सीखने की क्षमता को बनाए रखते हुए शिक्षा के साथ सहजता महसूस करें। यह पहल इस बात को समझती है कि बच्चों का मानसिक और भावनात्मक विकास उनकी शुरुआती शिक्षा के अनुभवों से गहराई से जुड़ा होता है। NEP 2020 के अनुसार, "प्रारंभिक शिक्षा में बाल केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने से बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, और मानसिक विकास में सहायता मिलती है।"[7] विद्या प्रवेश इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए परिवार और समुदाय की भागीदारी को प्राथमिकता देता है। यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों की शिक्षा केवल स्कूल तक सीमित न रहकर, उनके घर और समुदाय के सहयोग से एक व्यापक अनुभव बने।

इस पहल के तहत स्कूलों में अभिभावकों और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद स्थापित किया गया है, जिससे बच्चों की शिक्षा और उनकी आवश्यकताओं के बीच तालमेल बैठाया जा सके। इसके अतिरिक्त, विद्या प्रवेश ने बच्चों के सीखने के स्तर की पहचान के लिए मूल्यांकन

[7] *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* (*NEP 2020*), अध्याय 1.3।

आधारित प्रक्रियाएँ भी शामिल की हैं। MHRD की रिपोर्ट के अनुसार, "विद्या प्रवेश ने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को उनके मानसिक और भावनात्मक विकास के साथ जोड़ा है, जिससे उनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि हुई है।"[8] इस प्रकार, विद्या प्रवेश ने प्रारंभिक शिक्षा को एक समग्र और बाल केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान किया है। यह पहल बच्चों को शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक रही है और उन्हें उनकी शैक्षणिक यात्रा के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है।

- **स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट (Smart Village School Project) :-**

स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट मध्य प्रदेश में शिक्षा को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा को लागू करके छात्रों को गुणवत्तापूर्ण और आधुनिक शिक्षण संसाधन उपलब्ध कराना है। यह परियोजना NEP 2020 के तहत डिजिटल शिक्षा के उपयोग को प्राथमिकता देने के दृष्टिकोण को लागू करती है। इस परियोजना के तहत ग्रामीण स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल बोर्ड, और ऑनलाइन शिक्षण सामग्री का उपयोग किया गया। डिजिटल उपकरणों के माध्यम से शिक्षा को अधिक संवादात्मक और रुचिकर बनाया गया, जिससे छात्रों का सीखने का अनुभव बेहतर हुआ। उदाहरण के लिए, स्मार्ट क्लासरूम ने जटिल शैक्षणिक अवधारणाओं को समझने में छात्रों की सहायता की, जबकि डिजिटल बोर्ड ने शिक्षकों को अधिक प्रभावी और रचनात्मक तरीके से पढ़ाने में सक्षम बनाया। NEP 2020 के अनुसार, "डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन सामग्री का उपयोग शिक्षा को सुलभ और गुणवत्ता युक्त बनाने में सहायक होता है।"[9] इस परियोजना ने ग्रामीण छात्रों को इन संसाधनों से जोड़ा, जो पहले केवल शहरी स्कूलों तक सीमित थे। इसके अतिरिक्त, स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट ने शिक्षकों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया। इसके परिणामस्वरूप शिक्षकों की दक्षता में सुधार हुआ और छात्रों को अधिक उन्नत और व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हुई।

- **सामुदायिक सेवा और शिक्षा का समन्वय -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने शिक्षा को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित न रखकर इसे सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक सेवा से जोड़ने पर बल दिया है। सामुदायिक सेवा और शिक्षा के समन्वय ने छात्रों को अपने समाज और पर्यावरण के प्रति जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस पहल के तहत कई विद्यालयों ने सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का आयोजन किया, जिनमें वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, और स्थानीय मुद्दों पर चर्चाएँ शामिल थीं। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को

[8] *MHRD रिपोर्ट: प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा पर रिपोर्ट*, 2020, पृष्ठ 8।

[9] *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)*, अध्याय 24.6।

पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समस्याओं की पहचान, और उनके समाधान के प्रयासों में भाग लेने का अवसर मिला। उदाहरण के लिए, स्वच्छता अभियान के तहत छात्रों ने अपने स्कूल और आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई की और लोगों को स्वच्छता के महत्त्व के बारे में जागरूक किया। **MHRD की एक रिपोर्ट** में कहा गया है कि "सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों ने न केवल सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को समझा, बल्कि उनमें नेतृत्व और सामूहिक कार्य क्षमता का भी विकास हुआ।"[10]सामुदायिक सेवा परियोजनाएँ न केवल छात्रों के सामाजिक विकास में सहायक हैं, बल्कि उनके शैक्षणिक अनुभव को भी समृद्ध करती हैं। इन गतिविधियों ने छात्रों को अपने स्थानीय समुदायों के साथ जुड़ने और उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए सक्रिय प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही, छात्रों ने इन परियोजनाओं के माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान और कौशल प्राप्त किया, जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार, सामुदायिक सेवा और शिक्षा के समन्वय ने शिक्षा को एक सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में सशक्त बनाया है। यह पहल छात्रों को न केवल अपने व्यक्तिगत विकास के लिए बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए भी प्रेरित करती है।

- **सामुदायिक भागीदारी के लाभ :-**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने सामुदायिक भागीदारी को शिक्षा में सुधार और समावेशिता बढ़ाने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया है। सामुदायिक सहभागिता ने शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसने स्कूलों और समुदायों के बीच एक मजबूत और सकारात्मक संबंध स्थापित किया है, जो शिक्षा के हर पहलू को सुदृढ़ करता है।

- **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से स्कूलों में संसाधनों और सुविधाओं की उपलब्धता में सुधार हुआ। स्थानीय समुदाय और अभिभावकों ने स्कूलों में बुनियादी ढाँचे, शिक्षण सामग्री, और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के लिए सक्रिय योगदान दिया। MHRD की रिपोर्ट के अनुसार, "सामुदायिक भागीदारी ने स्कूलों में बेहतर संसाधन और शैक्षणिक वातावरण प्रदान किया है, जिससे छात्रों के सीखने के अनुभव में सुधार हुआ।"[11]
- **छात्रों की भागीदारी और प्रदर्शन में वृद्धि:** समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भूमिका ने छात्रों को शिक्षा के प्रति अधिक प्रेरित किया। सामुदायिक कार्यक्रमों, अभिभावक-शिक्षक बैठकों, और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को उनकी पढ़ाई में रुचि और प्रेरणा

[10] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी,* 2020, पृष्ठ 12।

[11] *MHRD रिपोर्ट: शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी*, 2020, पृष्ठ 12।

मिली। उदाहरण के लिए, स्कूलों में आयोजित सामुदायिक सेवा परियोजनाओं ने छात्रों के आत्मविश्वास और सहभागिता को बढ़ावा दिया।

- **स्थानीय और सांस्कृतिक ज्ञान का समावेश:** सामुदायिक भागीदारी ने शिक्षा को स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, और भाषा से जोड़कर इसे अधिक प्रासंगिक बनाया। स्कूलों में लोककथाओं, क्षेत्रीय कला, और सांस्कृतिक उत्सवों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर छात्रों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ा गया। यह न केवल छात्रों के सांस्कृतिक ज्ञान को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें सामाजिक विविधता का सम्मान करना भी सिखाता है।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** सामुदायिक सहभागिता ने स्कूल प्रबंधन और शिक्षण प्रक्रियाओं में पारदर्शिता बढ़ाई। स्कूल प्रबंधन समितियाँ (SMCs) और ग्राम पंचायतों की सक्रिय भागीदारी ने स्कूलों की प्रगति और संसाधनों के उपयोग की निगरानी सुनिश्चित की। इससे स्कूल प्रशासन में जवाबदेही और सहयोग की भावना विकसित हुई।

☐ **निष्कर्ष -**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सामुदायिक भागीदारी ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार और नवाचार की नींव रखी है। इस पहल ने शिक्षा को केवल एक शैक्षणिक प्रक्रिया से आगे बढ़ाकर इसे समाज और समुदाय का अभिन्न हिस्सा बना दिया है। स्कूल प्रबंधन समितियों ने शिक्षा में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की, जबकि ग्राम पंचायतों की भागीदारी ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा को सुदृढ़ किया। अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की सहभागिता ने छात्रों के शैक्षिक अनुभव को समृद्ध किया और उन्हें सांस्कृतिक, सामाजिक, और नैतिक मूल्यों से जोड़ा।

विद्या प्रवेश और स्मार्ट विलेज स्कूल प्रोजेक्ट जैसे नवाचारों ने छात्रों को आधुनिक शिक्षा संसाधनों तक पहुँच प्रदान की, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक रोचक और प्रभावी बनी। सामुदायिक सेवा परियोजनाओं ने छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व कौशल का विकास किया, जो उनके समग्र व्यक्तित्व निर्माण में सहायक रहा। सामुदायिक भागीदारी के इन प्रयासों ने शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच, और प्रासंगिकता को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। यह पहल शिक्षा को समावेशी और सशक्त बनाने के साथ-साथ समाज के हर वर्ग को इसके विकास में सहभागी बनाने में सफल रही है। NEP 2020 का यह दृष्टिकोण न केवल वर्तमान शिक्षा प्रणाली की जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी छात्रों और समाज को तैयार करता है। इस प्रकार, सामुदायिक भागीदारी शिक्षा को एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का माध्यम बनाने में एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करती है। NEP 2020 के माध्यम से यह दृष्टिकोण छात्रों और समाज दोनों के लिए एक उज्जवल भविष्य की नींव रखता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. NEP 2020 – शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
2. NEP 2020 – AICTE संस्करण

3. Parental and Community Involvement in Education: Insight from NEP-2020, JETIR जर्नल .
4. Effect of Community Participation in Education on Quality of Education, ResearchGate .
5. Community Participation in Indian Education System: A Reflection, Vidhyayana E-Journal .
6. Unveiling the Synergy Between Community Participation and Indian Traditional Knowledge in School Education, International Journal of Advanced Research .

*विभागाध्यक्ष, वैकल्पिक शिक्षा एवं समग्र विकास विभाग, साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची, रायसेन, (मध्य प्रदेश)।